स्वमान की स्मृति का स्विच ऑन करने से – देह भान के अंधकार की समाप्ति

18-2-94

ताज़, तख्त और तिलक की स्मृति दिलाकर फ़रिश्ते स्वरूप में स्थित कराने वाले अकालमूर्त बापदादा अपने अकाल तख्तनशीन बच्चों प्रति बोले–

आज अकाल मूर्त बाप सभी अकाल तख्तधारी, विश्व कल्-ाण के ताजधारी, मस्तक में चमकते हुए बिन्दी के तिलकधारी बच्चों को देख रहे हैं। हर एक तख्तधारी भी हैं, ताजधारी भी हैं, तिलक भी सभी का चमक रहा है। सभी के मस्तक बीच आत्मा बिन्दी सितारे के समान दिखाई दे रही है। आप सभी भी अपने तख्त, ताज और तिलक को देख रहे हो। सारी सभा बापदादा को ताज और तिलकधारी, तख्तनशीन दिखाई दे रही है। -ो अलौकिक सभा, कलि-ुगी राज्-ा सभा और सत-ुगी राज्-ा सभा से कितनी न्-ारी और प्-ारी है! तो ऐसी सभा की अधिकारी आत्मा-ें कितनी प्-ारी हैं! आप सभी को भी अपना -ो तख्त, ताज और तिलकधारी स्वरूप प्-ारा लगता है ना! जब अकाल तख्तनशीन, अकालमूर्त, श्रेष्ठ आत्मा स्थिति में स्थिति हो तख्त पर बैठते हो तो -ाह स्थिति कितनी श्रेष्ठ है! सभी के श्रेष्ठ स्थिति की झलक इस सूरत को फ़रिश्ता बना देती है। साधारण सूरत नहीं, फ़रिश्ता सूरत। तो फ़रिश्ता सूरत भी कितनी प्-ारी है! फ़रिश्ते सभी को बहुत प्-ारे लगते हैं। क्-ोंकि फ़रिश्ता सर्व का होता है, एक-दो का नहीं। बेहद की दृष्टि, बेहद की वृत्ति, बेहद की स्थिति वाला है। फ़रिश्ता सर्व आत्माओं के प्रति परमात्म सन्देश वाहक है। फ़रिश्ता अर्थात् सदा उड़ती कला वाला। फ़रिश्ता अर्थात् सर्व का रिश्ता एक बाप से जुटाने वाला है। फ़रिश्ता अर्थात् डबल लाइट। देह और देह के सम्बन्ध से न्-ारा, हल्का। फ़रिश्ता अर्थात् सर्व को स्व-ं की चलन और चेहरे द्वारा बाप समान बनाने वाला। फ़रिश्ता अर्थात् सहज और स्वत: अनादि और आदि संस्कार सदा इमर्ज स्वरूप में दिखाने वाला। फ़रिश्ता अर्थात् निमित्त भाव, निर्मान स्वभाव और सर्व प्रति कल्-ाण की श्रेष्ठ भावना वाला। ऐसे फ़रिश्ते हो ना? फ़लक से कहो–हम नहीं होंगे तो कौन होगा! फ़लक है ना! तो बापदादा ऐसे फ़रिश्तों की दरबार देख रहे हैं। सिर्फ इसी स्वमान में स्थित रहने

से देहभान स्वत: ही समाप्त हो जा-ोगा।

बाप देखते हैं कि बच्चे देहभान को छोड़ने की बहुत मेहनत करते हैं। एक देहभान के रूप को छोड़ते हैं तो दूसरा आ जाता है, फिर दूसरे को छोड़ते हैं तो तीसरा आ जाता है। लेकिन छोड़ना सदा मुश्किल होता है और धारण करना सहज होता है। तो बापदादा कहते हैं कि स्वमान में सदा रहो। जहाँ स्वमान है वहाँ देहभान आ ही नहीं सकता। तो छोड़ने की मेहनत नहीं करो लेकिन स्वमान में स्थित रहने का अटेन्शन रखो और संगम-ुग पर स्व-ं बाप द्वारा कितने अच्छे-अच्छे स्वमान प्राप्त हैं। प्राप्त करना नहीं है, प्राप्त हैं। अपने स्वमान की लिस्ट निकालो। कितनी बड़ी लिस्ट है! सारे कल्प में कितने भी स्वमान अर्थात् टाइटल्स किसी भी नामीग्रामी आत्मा के हों, चाहे राजनेता हो, चाहे अभिनेता हो, चाहे धर्मात्मा हो, चाहे महान् आत्मा हो, उनके अगर टाइटल गिनती भी करो तो आपके स्वमान की लिस्ट से ज-ादा हो सकते हैं? और रोज़ सवेरे-सवेरे बापदादा स्वमान की स्मृति दिलाते हैं, स्वमान में स्थित कराते हैं। रोज़ भी एक न-े ते न-ा स्वमान स्मृति में रखो तो स्वमान के आगे देहभान ऐसे भाग जाता जैसे रोशनी के आगे अंधकार भाग जाता। न सम-ा लगता, न मेहनत लगती। तो बार-बार भिन्न-भिन्न देहभान को मिटाने की मेहनत क-ों करते हो? स्वमान की स्मृति का स्विच ऑन करना नहीं आता है क-ा? कितना भी गहरा काला बादल सू-र्ा की रोशनी को छिपाने वाला हो लेकिन आपके पास ऑटोमेटिक डा-ारेक्ट परमात्म लाइट का कनेक्शन है। डा-ारेक्ट लाइन है ना? लाइन क्ली-ार है -ा लीकेज है? किसका लिंक होता है लेकिन लीकेज हो जाती है। तो डा-ारेक्ट लाइन कितनी पॉवरफुल होती है! डा-ारेक्ट कनेक्शन है -ा इनडा-ारेक्ट है? सभी की डा-ारेक्ट लाइन है ना? सभी को डा-ारेक्ट लाइन मिल गई है? फिर तो एक बादल क-ा, सारे बादल आ जा-ें, अंधकार कर सकते हैं क-ा? स्मृति का स्विच डा-ारेक्ट लाइन से ऑन कि-ा और इतनी लाइट आ जा-ोगी जो स्व-ं तो लाइट में होंगे ही लेकिन औरों के लि-े भी लाइट हाउस हो जा-ेंगे। ऐसे होता है ना? अनुभवी हो ना? लेकिन कभी-कभी अनुभव को किनारे रख देते हैं। सहारा मिला है लेकिन कभी-कभी सहारे के बजा-ा किनारे हो जाते हैं। मेहनत लगती है क-ा? सदा नहीं लगती, कभी-कभी लगती है! स्विच ऑन करना भूल जाते हो क-ा? वास्तव में अगर एक मास्टर

सर्वशक्तिमान् का स्वमान भी -ाद हो तो मेहनत की कोई बात ही नहीं है। मार्ग मेहनत का नहीं है लेकिन हाइ-वे के बजा-ा गलि-ों में चले जाते हो वा मंज़िल के निशाने से और आगे बढ़ जाते हो तो लौटने की मेहनत करनी पड़ती है। बापदादा सदा अपने स्नेह और सह-ोग की गोदी में बिठाकर मंज़िल पर ले जा रहे हैं। गोदी में बैठकर मंज़िल पर पहुँचने में मुश्किल क-ों होता है? स्नेह और सह-ोग की गोदी से निकल कभी और आकर्षण खींचती है तो चक्कर लगाने निकल जाते हो। थक भी जाते हो फिर मेहनत भी महसूस करते हो। तो इस वर्ष क-ाा करेंगे? मेहनत समाप्त। मोहब्बत में, लॅव में लीन हो जाओ, लॅवलीन हो हर का-ा करो। जो लीन होता है उसको और कुछ दिखाई नहीं देता, आकर्षित नहीं करता। तो लॅव में रहते हो। ऐसा कोई होगा जो कहे–मुझे बाप से प्-ार नहीं है, लॅव नहीं है! सभी का लॅव है ना! लेकिन कभी लॅव में रहते हो, कभी लॅव में लीन रहते हो। नहीं तो देखो मन-बुद्धि द्वारा स्थिति में बाप का सर्व सम्बन्धों से साथ है। साथ भी है और सेवा में बाप हर सम-ा साथी है। तो स्थिति में साथ है और सेवा में साथी है। जहाँ सदा साथ भी है और साथी भी है तो वहाँ क-ाा मुश्किल है? परम आत्मा की महिमा ही है मुश्किल को सहज करने वाले। ऐसा बाप आपके साथ है और साथी है तो मुश्किल हो सकता है? फिर क-ों मुश्किल करते हो?

सर्व सम्बन्धों की सर्व सम-ा प्रमाण बाप स्व-ं हर बच्चे को ऑफ़र करते हैं। जैसा सम-ा वैसे सम्बन्ध से साथ रहो वा साथी बनाओ। कोई सम-ा तो सम्बन्ध से साथी बनाते हो और कोई सम-ा साथी को किनारे कर देते हो। फिर कहते हैं कि अकेलापन फ़ील होता है। चलते-चलते अकेलापन लगता है। और अकेलापन होने से क-ाा होता है? अपना श्रेष्ठ जीवन साधारण जीवन अनुभव होता है। फिर कहते हैं बोरिंग लाइफ हो गई है, कुछ चेंज चाहि-ो। एक तरफ़ बापदादा को खुश करते हैं कि हम तो कम्बाइन्ड हैं। कम्बाइन्ड कभी अकेला होता है क-ाा? बड़ी अच्छी-अच्छी बातें करते हैं–बाबा, हम तो हैं ही कम्बाइन्ड। फिर १५-२० वर्ष बीतता तो कहते हैं चेंज चाहि-ो, अकेले हो ग-े हैं। वैसे भी देखो दुनि-ाा में अगर चेंज चाहते हैं तो कोई सागर के किनारे पर जाकर सो जाते हैं, कोई मनोरंजन में चले जाते हैं, डांस करते हैं, कोई गीतों के मौज में मौज मनाते हैं, कोई कम्पनी

-ाा कम्पैनि-ान का साथ लेते हैं। -ाही करते हो ना! खेल करते हो? खेलों की दुनि-ाा में बगीचे में चले जाते हो! -ाहाँ ज्ञान सागर का किनारा है -ाह भूल जाते हो। अगर सागर पसन्द है तो सागर के किनारे बैठ जाओ। बाप ज्ञान सागर है ना। बाप कम्पैनि-ान नहीं है क-ाा? उससे मज़ा नहीं आता है? कि समझते हो बिन्दी से क-ाा मज़ा आ-ोगा! आप सभी को सदा बहलाने के लि-ो तो ब्रह्मा बाप भी अव्-ाक्त हुए। लेकिन -ाहाँ तो सदा का साथी चाहि-ो ना। जब भी अपने को अकेलापन अनुभव करो तो उस सम-ा बिन्दु रूप नहीं -ाद करो। वह मुश्किल होगा, उससे बोर हो जा-ोंगे। लेकिन अपने ब्राह्मण जीवन की भिन्न-भिन्न सम-ा की रमणीक अनुभव की कहानि-ाँ स्मृति में लाओ। अनुभव की कहानि-ों का किताब सभी के पास है। जब बोर हो जाते हैं तो नॉवेल्स पढ़ते हैं ना। तो आप अपने कहानि-ों का किताब खोलो और उसे पढ़ने में बिज़ी हो जाओ। अपने स्वमान की लिस्ट को सामने लाओ, अपने प्राप्ति-ों की लिस्ट को सामने लाओ। ब्राह्मण संसार के विचित्र प्रैक्टिकल कहानि-ों को स्मृति में लाओ। जैसे अपने को चेंज करने के लि-ो समाचार पत्र पढ़ने का भी आधार लेते हैं तो ब्राह्मण संसार के कितने अलौकिक समाचार आदि से अब तक देखे हैं वा सुने हैं, समाचार पत्र भी आपके पास हैं। कइ-ों को पेपर पढ़ने के बिना चैन नहीं आता है। पेपर भी आपके पास है। पेपर पढ़ो। डान्स और साज़ तो जानते ही हो। बिना थकावट के डांस करते हो। मनमनाभव होना ही सबसे बड़ा मनोरंजन है। क-ोंकि सर्व सम्बन्धों का रस वा अनुभूति-ाां करना ही मनमनाभव है। सिर्फ बाप के रूप में -ाा विशेष तीन रूपों के सम्बन्ध से अनुभव नहीं है लेकिन सर्व सम्बन्धों के स्नेह का अनुभव कर सकते हो। सम्बन्धों से -ाद तो करते हो लेकिन फ़र्क क-ाा हो जाता है? एक है दिमाग से नॉलेज के आधार पर सम्बन्ध को -ाद करना और दूसरा है दिल से उस सम्बन्ध के स्नेह में, लॅव में लीन हो जाना। आधा तो करते हो बाकी आधा रह जाता है। इसलि-ो थोड़ा सम-ा तो ठीक रहते हो, थोड़े सम-ा के बाद सिर्फ दिमाग से ही सम्बन्ध को -ाद कि-ाा तो दिमाग में दूसरी बात आने से दिल बदल जाता है। फिर मेहनत करनी पड़ती है। फिर क-ाा कहते हो–हमने -ाद तो कि-ाा, बाबा मेरा कम्पैनि-ान है, लेकिन कम्पैनि-ान ने तोड़ तो निभाई नहीं, अनुभव तो कुछ हुआ नहीं – -ो दिमाग से -ाद कि-ाा। दिल में स्नेह को समा-ाा नहीं। जब भी

कोई बात दिमाग में आती है तो वह निकलती भी जल्दी है। लेकिन दिल में समा जाती है तो उसको चाहे सारी दुनि-ा भी दिल से निकालना चाहे, तो भी नहीं निकाल सकती। तो सर्व सम्बन्धों को सम-ा प्रमाण, जिस सम-ा जिस सम्बन्ध की आवश-ाकता है, आवश-ाकता है फ्रैन्ड की और -ाद करो बाप को तो मज़ा नहीं आ-ेगा। इसलि-ो जिस सम-ा, जिस सम्बन्ध की अनुभूति चाहि-ो, उस सम्बन्ध को स्नेह से, दिल से अनुभव करो। फिर मेहनत भी नहीं लगेगी और बोर भी नहीं होंगे, सदा मनोरंजन। तो इस वर्ष क-ाा करेंगे?

मेहनत से निकलना है। हर मास सिर्फ ओ.के. लिखना, और कुछ नहीं लिखना। ओ.के. से समझ जा-ेंगे कि मेहनत से निकल ग-ो। लम्बे-लम्बे पत्र नहीं लिखना। नहीं तो कहते हैं कि पत्र तो लिखा, जवाब नहीं मिलता। ऐसे नहीं है कि आपके पत्र पहुँचते नहीं हैं। पत्र लिखना शुरु करते हो और वहाँ कम्प्-ाुटर में पहले आ जाता है, पोस्ट में पीछे पहुँचता है। वैसे बापदादा इतने लम्बे पत्रों का रोज़ की मुरली में सबको जवाब देता है। रोज़ पत्र लिखते हैं। इतना लम्बा पत्र कोई लिखता है! तो इतने अपने स्वमान को देखो–परमात्मा का कितना प्-ाार है आप सबसे। परमात्मा का प्-ाार है तब पत्र लिखते हैं अर्थात् मुरली में उत्तर भी देते हैं और -ाद-प्-ाार भी देते हैं। अगर कोई भी क्वेश्चन उठता है -ाा कोई भी समस-ाा सामने आती है तो मुरली से रेसपॉन्स मिलता है। तो फिर कभी शिका-ात नहीं करना कि उत्तर नहीं आ-ाा। बाकी अच्छा करते हो जो दिल में बात आती है वो बाप के आगे रखना अर्थात् दिल से निकाल दि-ाा। वो भले करो, लेकिन शॉर्ट लिखो। पत्र जब लिखते हो तो उसी सम-ा दिल तो हल्की हो जाती है ना। क-ोंकि दे दि-ाा ना। फिर दूसरे दिन की मुरली उस विधि से देखो कि जो मैंने पत्र लिखा उसका उत्तर क-ाा है? रेसपॉन्स मिलता तो है ना। बेहद का बाप है तो पत्र भी बेहद का लिखेगा, छोटा थोड़ेही लिखेगा।

बापदादा ने देखा कि चारों ओर के डबल विदेशी बच्चे सेवा में अच्छी लगन से लगे हुए हैं। एक-एक को देखते हैं तो हर एक एक-दो से प्-ाारे लगते हैं। अगर नाम लेंगे तो कितने नाम लेंगे! इसीलि-ो सभी अपने नाम से विशेष सेवा की रिटर्न मुबारक स्वीकार करना। नाम लेना शुरु करेंगे तो माला बनानी पड़ेगी। लेकिन माला के सभी मणके बापदादा के सामने हैं। सम-ा प्रति सम-ा बेहद की

सेवा और सफ़लता सम्पन्न होती जा रही है। वर्तमान सम-ा विशेष विदेश में दो सेवाओं का रिज़ल्ट अच्छा प्रत-ाक्ष हुआ। अनेक प्रकार की सेवा-ें तो चलती ही रहती हैं लेकिन विशेष एक -ो ग्लोबल बुक, जो मेहनत करके तै-ाार कि-ाा है, उसके निमित्त चारों ओर विशेष आत्माओं का सम्बन्ध-सम्पर्क में आना सहज हो ग-ाा। तो जिन बच्चों ने दिल व जान, सिक व प्रेम से सम-ा दि-ाा, सह-ोग दि-ाा, उसके प्रत-ाक्षफल सेवा के निमित्त आत्माओं को बापदादा पद्म गुणा मुबारक दे रहे हैं। और साथ-साथ जो अभी डॉ-ालाग वा रिट्रीट कि-ाा उसकी रिज़ल्ट भी पहले से अच्छे ते अच्छी रही। और सभी देश वालों ने इसमें जो सह-ोग दि-ाा, उन सबको भी मुबारक। लक्ष-ा अच्छा रखा। तो चारों ओर अभी इस दो प्रकार की सेवा की अच्छी धूम-धाम चल रही है और आगे भी चलती रहेगी। बापदादा को -ाद है कि पहले विदेश से वी.आई.पीज़. तो छोड़ो, आई.पीज़. लाना भी मुश्किल लगता था। और अभी तो सहज लगता है ना! तो -ाह सेवा का प्रत-ाक्षफल है। और कितनों की दुआ-ें मिलीं! जिसके हाथ में बुक जाता है, उन सबकी दुआ-ें किसके खाते में जमा होती हैं? जो निमित्त बनते हैं। चाहे देने की सेवा, चाहे बनाने की सेवा, चाहे आइडि-ाा निकालने की, चाहे लिखने की–सबको दुआ-ें मिलती हैं। तो कितनी दुआ-ें मिल रही हैं! बहुत दुआ-ें मिलती हैं, आप सिर्फ रिसीव करो। अपने में ही बिज़ी रहते हो तो दुआ-ें रिसीव नहीं करते हो। और जो भी आई.पीज़. -ाा वी.आई.पीज़. सम्पर्क में आते हैं तो एक कितनों को अनुभव सुना-ेंगे तो उन सभी की दुआ-ें ब्राह्मण आत्माओं को बहुत-बहुत प्राप्त होती हैं। अगर दुआ-ें रिसीव करो तो भी सम्पन्न तो हो ही जा-ेंगे। बुक भी अच्छा निकाला और -ो प्रोग्राम भी बहुत अच्छा है। और भारत वालों की विशेष सेवा अभी कार -ात्रा की चल रही है। (बिज़नेस विंग के भाई-बहिनों ने ११ कारों की एक रेली राजकोट से बाम्बे तक निकाली है, जिसमें अनेक प्रकार की सेवा-ें हो रही हैं) उसकी भी रिज़ल्ट बहुत अच्छी निकल रही है और आगे एक भी निमित्त बन ग-ो तो अनेकों के भाग-ा जगाते रहेंगे। तो -ो भी सेवा की रिज़ल्ट अच्छी दिखाई दे रही है। जो भी इस सेवा में निमित्त हैं, उमंग-उत्साह से बढ़ रहे हैं, उन सभी को भी, चारों ओर के भारतवासी बच्चों को, सह-ोगी बच्चों को, निमित्त बच्चों को बापदादा मुबारक देते हैं। मेहनत नाम मात्र और सफ़लता ज-ाादा, अब

ऐसी सेवा के प्लैन बनाओ। इस सेवा में भी -ाह दिखाई देता है कि मेहनत कम, रिज़ल्ट ज़-ाादा। ऐसे विदेश के दोनों प्रोग्राम में भी ऐसे हैं। अच्छा।

देश-विदेश के सर्व सेवा में उमंग-उत्साह से आगे बढ़ने वाले, अथक बन औरों को दान-वरदान देने वाली आत्माओं को, चारों ओर के बाप के सर्व सम्बन्ध के लॅव में लीन रहने वाली लॅवलीन आत्माओं को, सदा सहज अनुभव करने, औरों को भी सहज अनुभव कराने वाली सहज-ोगी आत्माओं को, सदा स्व-ं को स्वमान द्वारा सहज देहभान से मुक्त करने वाली जीवनमुक्त आत्माओं को, सदा बाप को साथ अनुभव करने वाले और साथी अनुभव करने वाले समीप आत्माओं को बापदादा का -ाद-प्-ाार और नमस्ते।

रिट्रीट वा विदेश सेवा में सह-ोगी भाई बहिनों से तथा दादि-ों से अव्-ाक्त बापदादा की मुलाकात:-

सभी खुशी से सेवा करते हैं तो उसका रिज़ल्ट भी ऐसा निकलता है। जैसा सम-ा समीप आ रहा है, सम-ा के साथ सफ़लता भी समीप आ रही है। कुछ सम-ा पहले सफ़लता दूर लगती थी लेकिन अभी सफ़लता कितनी समीप अनुभव हो रही है। अभी कोई भी कार्-ा करते हो तो आता है ना कि सफ़लता हुई पड़ी है। सबकी स्थिति भी सहज-ोगी की बढ़ती जाती है ना। तो जितनी स्थिति सहज-ोगी की बढ़ती है उतनी सफ़लता भी स्व-ं आगे आती है। सफ़लता के पीछे नहीं जाते, लेकिन सफ़लता स्व-ं आती है। अच्छी विधि है। अभी स्व-ं ऑफ़र करते हैं। पहले कॉन्टेक्ट करना मुश्किल था। बापदादा को ज-ान्ती (लण्डन की ज-ान्ती बहन) की बात -ाद आती है। जब बाहर की सेवा कहते थे तो सभी को कहती थी बड़ा मुश्किल है, विदेश है। आप लोगों को विदेश का पता नहीं। और अभी व्-ाक्ति मिलते हैं, स्थान कम है। मधुबन में भी देखो स्थान के कारण नम्बर मिलता है। सभी ने मेहनत अच्छी की। मोहब्बत में रहकर मेहनत की इसलि-े मेहनत मोहब्बत में बदल गई। (बहनों ने बापदादा को ग्लोबल बुक तथा ज्वेल आफ लाइट बुक दिखाई, बापदादा ने सभी सेवा में सह-ोग देने वालों को स्टेज पर बुला-ाा) इन्टरनेशनल है ना। जब चीज़ तै-ाार हो जाती है तो कितनी खुशी होती है। पहले बना-ाा जाता है फिर जब तै-ाार हो जाती है तो सभी के सामने आ

जाती है। लण्डन, अमेरिका, ऑस्ट्रेलि-ा सभी ने इसमें सह-ोग अच्छा दि-ा है। इसलिए जो भी निमित्त बने सभी अपने-अपने नाम से -ाद स्वीकार करना। बापदादा सभी निमित्त बने हुए बच्चों को मुबारक देते हैं। (चिकागो की कान्फ्रेन्स भी अच्छी रही) कानफ्रेन्स की सफ़लता भी अच्छी हुई। सभी ने अच्छी सेवा की। अच्छी हिम्मत रखी और हिम्मत का प्रत्-ाक्षफल सर्व की मदद मिली। ब्राह्मण समाचार पत्रों में तो विशेष नाम आ ग-ा। जो भी विशेष सेवा करते हैं उसका प्रत्-ाक्षफल पहले मन में खुशी होती है और साथ-साथ ब्राह्मणों के बुक में जमा हो जाता है। (मैक्सिको की कान्फ्रेन्स भी अच्छी हुई) सुना-ा ना कि हर का-र्ा में सफ़लता समीप आ रही है। जो भी, जहाँ भी सेवा कर रहे हो तो सर्व के संगठन के वा-ाब्रेशन से विशेष का-र्ा में सफ़लता मिल रही है। जैसे बिल्डिग बनती है ना तो एक-एक कण का सह-ोग होता है, एक-एक ईट का सह-ोग होता है तब बिल्डिग बनती है। कहने में तो ऐसा ही आता है कि फलाने कॉन्ट्रेक्टर ने बना-ा लेकिन ईट नहीं होती तो कॉन्ट्रेक्टर क-ा करता? तो आप सभी सेवा के सफ़लता के बिल्डिग की एक-एक विशेष ईट हो, फ़ाउन्डेशन हो। बाकी जिस का-र्ा के लि-े जो निमित्त बनता है उनका विशेष नाम हो जाता है। (-ाह -ाू.एन.की गोल्डन जुबली है। फ़ैमिली इ-ार चल रहा है) तो गोल्डन सफ़लता ला-ेंगे ना। आपका तो हर वर्ष फ़ैमिली इ-ार चल रहा है। फ़ैमिली बढ़ रही है, फ़ैमिली सुखी हो रही है। फ़ैमिली प्लैनिंग तो आपका है ही। फ़ैमिली कन्ट्रोल प्लैनिंग नहीं, फ़ैमिली बढ़ने का प्लैनिंग। दुनि-ा वाले कहते हैं छोटा परिवार सुखी परिवार और -ाहाँ कहते हैं बड़ा परिवार, सुखी परिवार। सभी अच्छी मेहनत करते हैं। 'मेहनत' शब्द के बजा-ा, अच्छी सेवा करते हो। 'मेहनत' शब्द थोड़ा अच्छा नहीं लगता। सेवा द्वारा प्रत्-ाक्षफल खा रहे हो। डॉ-ालॉग अच्छा हुआ ना? सेवा से सभी खुश हैं? सब आगे बढ़ रहे हैं और बढ़ते ही रहेंगे। बुद्धि अच्छी चलाते हो। अब ऐसा प्लैन बनाओ जो कोई भी आत्मा ब्राह्मण परिवार से किनारे नहीं हो जा-े। किले को ऐसा मज़बूत करना पड़े जो कोई जा ही नहीं सके। अभी फिर भी सुनते हैं अच्छे-अच्छे चले ग-े, क-ों चले ग-े, कहाँ चले ग-े? तो ऐसा किला मज़बूत करो तो जो कोई सोचे तो भी जा नहीं सके। जैसे चारों ओर करेन्ट की तारें लगा देते हैं ना तो आप भी वा-ाब्रेशन द्वारा करेन्ट की तारें लगा दो, जो उन्हों को स्मृति आ जा-े। अच्छा!

अव्-ाक्त बापदादा की पर्सनल मुलाकात

ग्रुप नं. १

सर्व ख़ज़ानों से भरपूर रहने वाला ही विश्व कल्-ाणकारी है

भी अपने को विश्व कल्-ाणकारी बाप के बच्चे विश्व कल्-ाणकारी आत्मा-ें अनुभव करते हो? विश्व कल्-ाणकारी आत्माओं की विशेषता क्-ा होगी? विश्व का कल्-ाण करने वाली आत्मा पहले स्व-ं सर्व ख़ज़ानों से सम्पन्न होगी। तो सर्व ख़ज़ानों से भरपूर हो? कितने खज़ाने हैं? बहुत हैं ना! तो सब ख़ज़ानों से भरपूर आत्मा-ें ही औरों को दे सकेंगी। अगर ज्ञान का खज़ाना है तो फ़ुल ज्ञान हो, कोई भी कमी नहीं हो तब कहेंगे भरपूर। तो फ़ुल है -ा कभी कोई कम भी हो जाता है? है लेकिन सम-ा पर कार्-ा में लगा सके--ो चेकिंग सदा करते रहो। तो सम-ा पर -ाूज़ कर सकते हो कि सम-ा बीत जाता है पीछे सोचते हो? फिर क्-ा कहना पड़ता है–ऐसे करते थे, ऐसे होता था तो 'थे' और 'था' होता है। क्-ा चेक करना है कि सम-ा पर जो खज़ाना चाहि-ो वो खज़ाना कार्-ा में लगा -ा नहीं? विश्व कल्-ाणकारी आत्मा-ें सदा हर सम-ा चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में, हर सम-ा सेवा में बिज़ी रहती हैं। तो इतने बिज़ी रहते हो? सबसे ज्-ादा सेवा में बिज़ी कौन रहता है? क्-ोंकि जब नाम ही है विश्व कल्-ाणकारी तो -ाह आक्-ुपेशन हो ग-ा ना। तो जो आक्-ुपेशन होता है उसके बिना रह नहीं सकते। तो सदा बिज़ी हैं और सदा रहेंगे। सारा दिन बुद्धि में क्-ा रहता है? कोई आत्मा मिले और सन्देश दें। अच्छा है, भारतवासी अपने विधि से सेवा में आगे बढ़ रहे हैं और मलेशि-ा वाले अपनी विधि से, रशि-ा वाले अपनी विधि से, लेकिन सभी -ाद और सेवा की लगन से आगे बढ़ रहे हैं।

बापदादा को भी सभी बच्चों को देख खुशी होती है कि कहाँ-कहाँ से बिछुड़ी हुई आत्मा-ें अपने परिवार में पहुँच गई। आप सभी को भी खुशी है ना? अपना परिवार देख खुशी में नाचते हो ना? विश्व कल्-ाणकारी हैं तो चारों ओर के विश्व की आत्माओं का पार्ट नूंधा हुआ है। एक भी कोना रह जा-ेगा तो विश्व नहीं कहेंगे। अच्छा, रशि-ा में सेवा अच्छी बढ़ रही है। मलेशि-ा तो है ही आगे ना! अच्छी रिज़ल्ट है। भारत तो है ही फ़ाउन्डेशन। भारत जगा तब तो विदेश

जगा ना। तो हर स्थान और हर बच्चे की अच्छी खुशबू बाप के पास आती रहती है। भारतवासि-ों को अनेक तरफ़ की आत्माओं को देख और ज-ादा खुशी होती है। भारतवासी फ्राकदिल हैं। खुशी बढ़ती है ना–वाह, हमारा परिवार। आप सबको देख करके सभी के दिल से दुआ-ें निकलती हैं। बहुत अच्छा, जो हमारे बिछड़े हुए भाई-बहनें मिल ग-े। कोई बिछड़ा हुआ आकर परिवार में मिल जा-े तो कितनी खुशी होती है! तो आपको भी खुशी और सभी को भी खुशी होती है। श्रीलंका वाले भी लक्की हैं। क-ोंकि नाम ही है श्रीलंका। श्री सदा श्रेष्ठ को कहते हैं। तो श्रेष्ठ आत्मा-ें बन ग-े हैं ना! कितना भी कहाँ हंगामा होता रहे लेकिन आप सेफ हो। -ाद की छत्रछा-ा में हो। अच्छा!

ग्रुप नं. २

स्व-ं और सम-ा के महत्व को जानकर भविष-ा प्रालब्ध जमा करो

सदा अपने को बाप के साथ रहने वाली श्रेष्ठ आत्मा-ें अनुभव करते हो? सदा साथ रहने वाले वा कभी-कभी साथ रहने वाले क-ा समझते हो? जब बाप का साथ छूटता है तो और कोई साथी बनते हैं? मा-ा तो साथी बनती है ना! कितने जन्म मा-ा के साथी रहे? बहुत रहे ना। और बाप का साथ प्रैक्टिकल में कितने सम-ा का है? संगम-ुग है ना और संगम-ुग है भी सबसे छोटा -ुग। तो क-ा करना चाहि-े? सदा होना चाहि-े। क-ोंकि सारे कल्प में कितना भी पुरुषार्थ करो तो भी साथ का अनुभव कर सकेंगे? (नहीं) तो इसका सलोगन क-ा है? (अभी नहीं तो कभी नहीं) -ाह -ाद रहता है? सम-ा का भी महत्व -ाद रहे और स्व-ं का भी महत्व -ाद रहे। दोनों महत्व वाले हैं ना! इस संगम-ुग के सम-ा को, जीवन को–दोनों को हीरे तुल-ा कहा जाता है। हीरे का मूल-ा कितना होता है! तो इतना महत्व जानते हुए एक सेकण्ड भी संगम-ुग के साथ को छोड़ना नहीं है। सेकण्ड ग-ा, तो सेकण्ड नहीं लेकिन बहुत कुछ ग-ा। ऐसी स्मृति रहती है? सारे कल्प की प्रालब्ध जमा करने का सम-ा अब है। अगर सीज़न पर सीज़न को महत्व नहीं देते तो सदा के लि-े वंचित रह जाते हैं। तो इस सम-ा का महत्व है, जमा करने का सम-ा है। अगर राज-ा अधिकारी भी बनते हो

तो भी अभी के जमा के हिसाब से और पूज-ा भी बनते हो तो इस सम-ा के जमा के हिसाब से। एक छोटे से जन्म में अनेक जन्मों की प्रालब्ध जमा करना है। -ो -ाद रहता है कि कभी-कभी? सम टाइम है? तो -ो सम टाइम शब्द कब खत्म करेंगे? समाप्ति समारोह कब मना-ोंगे? रावण को भी मारने के बाद जलाकर खत्म कर देते हैं? तो अभी मारा है, जला-ा नहीं है। अच्छा, -ो वेराइटी ग्रुप है। बापदादा एक-एक रत्न की वैल्-ाु को जानते हैं। उसी अमूल्-ा रत्न की दृष्टि से देखते हैं। है ना अमूल्-ा रत्न! कम भाग्-ा नहीं है जो ऊंचे ते ऊंचे भगवान् के बन ग-ो। तो खुश रहो और खुशी बांटते चलो। भरपूर हैं ना कि थोड़ा कम है? जो फुल होता है वह फ़ेल नहीं होता। तो विज-ी हैं ना? अच्छा!

ग्रुप नं. ३

सपूत बन स्व-ं पर श्रीमत और वरदानों का हाथ अनुभव करते हुए समान बनने का सबूत दो

आ भी का लक्ष्-ा बाप समान बनने का है ना। बाप समान बनना है -ा बने हैं? फ़लक से कहो कि हम ही बने थे, हम ही हैं और हम ही बनते रहेंगे। आप सभी का सलोगन है 'फ़ालो फ़ादर'। तो फ़ालो फ़ादर करने वाले को क-ा कहेंगे? समान हुए ना। जो बाप के कदम वो आपके कदम, तभी तो फ़ालो फ़ादर कहेंगे। तो फ़ालो फ़ादर है? बापदादा सभी बच्चों को सदा सपूत बच्चों के रूप में देखते हैं। सपूत बच्चा किसको कहा जाता है? जो हर कर्म में सपूत बन बाप को सबूत दे। सपूत अर्थात् सबूत देने वाले। प्रत-ाक्षफल खा रहे हो ना कि भविष्-ा के लिए सिर्फ जमा होता है, वर्तमान में नहीं। एक कदम सेवा का करते हो वा -ाद में रहते हो तो शक्ति मिलती है, खुशी भी मिलती है, अनुभव है? प्रत-ाक्षफल खाने वाले अर्थात् सदा हेल्दी, वेल्दी और हैप्पी रहने वाले। तो सभी वेल्दी भी हो। कितने खज़ाने हैं? बहुत खज़ाने हैं ना। भरपूर हो ना? -ा थोड़ा-थोड़ा खाली हैं? जितना ख़ज़ानों से भरपूर रहेंगे तो जो सम्पन्न होता है उसमें हलचल भी नहीं होती और दूसरी चीज़ भर भी नहीं सकती। सपूत बच्चे अर्थात् सदा बाप के श्रीमत का हाथ और साथ अनुभव करने वाले। तो श्रीमत का हाथ

सदा अपने ऊपर अनुभव करते चलो। सदा हाथ है? तो जहाँ बाप का हाथ है वहाँ सफ़लता है ही है। बाप की श्रीमत का हाथ अर्थात् वरदान का हाथ। कोई भी का-र्य करते हो तो पहले -ो स्मृति में लाओ कि श्रीमत का हाथ, वरदान का हाथ सदा हमारे ऊपर है। अनुभव करते हो ना और बाप को भी सपूत बच्चों को वरदान देने में खुशी होती है। कभी भी -ो वरदान का हाथ छूट नहीं सकता। कोई छुड़ा सकता है, है किसकी ताकत कि कभी-कभी मा-ा की हो जाती है? मा-ा ने विदाई कर ली -ा कभी-कभी उसको बुला लेते हो? कमज़ोर होना अर्थात् मा-ा को बुलाना। कमज़ोर होते हो क-ा? चाहते नहीं हो लेकिन हो जाते हो? नहीं, हो ही नहीं सकते। मास्टर सर्वशक्तिमान् और कमज़ोर हो सकता है क-ा? रोशनी के होते अंधकार होगा क-ा? तो सर्वशक्तिमान् और कमज़ोर दोनों बातें मिलती हैं क-ा? फिर मा-ा को क-ों बुलाते हो? बुलाते नहीं हो, वो ज़बरदस्ती आती है। मा-ा का आपसे प्-ार है, आपका मा-ा से नहीं? सदा अमृतवेले अपने आपको विज-ा का तिलक लगाओ और बार-बार उसे रिफ्रेश करो। अनेक बार के विज-ी हो। -ो तो पक्का है ना! जब इतनी हिम्मत रख बाप के बन ग-ो तो बनने के बाद हिम्मत की पद्म गुणा मदद मिलती है। एक कदम की हिम्मत और पद्म क़दम की मदद। -ाह अनुभव है ना? पद्मगुणा मदद अनुभव करने वाले अर्थात् सदा बाप समान विज-ी हैं ही हैं। सबसे ज-ादा प्-ार बाप से है ना। तो जिससे प्-ार होता है उस जैसा तो बनना ही है। प्-ार का रेसपॉन्स है समान बनना। अच्छा, सभी अपने को बाप के समीप, बाप के प्-ारे ते प्-ारी आत्मा-ें अनुभव कर उड़ते चलो।

ग्रुप नं. ४

सदा बाप के दिलतख्तनशीन, परमात्म प्-ारे बनो तो बेफ़िक्र बादशाह बन जा-ेंगे

सभी लास्ट सो फ़ास्ट हो ना। फ़र्स्ट डिवीज़न में आने वाले हो? फ़र्स्ट आने वाले अर्थात् राज-ा अधिकारी आत्मा-ें। तो सभी राज-ा अधिकारी हो? सत-ुग-त्रेता के विश्व राज-ा के तख्तनशीन सम-ा प्रमाण कितने बनेंगे? सब बनेंगे! तो तख्त पर बैठेंगे -ा बैठने वाले के साथी होंगे? जब सभी को सुनाते

हो २१ जन्म हैं, तो कितने नम्बरवार तख्त पर बैठेंगे? इकट्ठे-इकट्ठे बैठेंगे -ा टर्न बाई टर्न बैठेंगे? सबसे बड़े से बड़े राज-ा अधिकार का अनुभव अब संगम पर स्वराज-ा का होता है। मज़ा तो स्वराज-ा अधिकारी का अभी अनुभव कर रहे हो ना। स्वराज-ा का नशा है ना -ा सत-ुग में जब तख्त पर बैठेंगे तब होगा? अभी का नशा बड़ा है -ा सत-ुग का नशा बड़ा है? (अभी का) तो निश्च-ा से सदा कहते हो कि स्वराज-ा अधिकारी सो विश्व राज-ा अधिकारी। स्वराज-ा हमारा ब्राह्मण जन्म का अधिकार है। -ाद रहता है ना कि कभी प्रजा भी बन जाते हो? प्रजा का अर्थ है अधीन रहना और राजा का अर्थ है अधिकारी। तो सदा अधिकारी रहते हो -ा कभी अधीन भी हो जाते हो? अभी संगम-ुग पर भी अगर 'सम टाइम' होगा तो 'सदा' कब होगा? अभी का सदा है -ा भविष्-ा का? पाण्डव विज-ी हो ग-े? इस सम-ा विज-ी हो -ा वहाँ भी जाकर रहेंगे, क-ा होगा? क-ोंकि आप सभी बाप के प्-ारे हो ना तो दिल तख्तनशीन हो। तो जो दिल तख्तनशीन हैं, दिल के प्-ारे हैं उसका चित्र स्वत: ही दिल में खिंचता है। आप सभी क-ा कहते हो कि हम सदा कहाँ रहते हैं? बाप के दिल में रहते हो ना? दिल से जुदा हो ही नहीं सकते। कोई की हिम्मत नहीं जो दिलाराम के दिल से आपको अलग कर सके। -ो पक्का निश्च-ा है ना? गीत गाते हो ना–हम जुदा हो नहीं सकते। चाहे सारी दुनि-ा अलग करने की कोशिश करे तो भी नहीं हो सकते। क-ोंकि कोटों में कोई एक आप हो, और तो आपके आगे कुछ भी नहीं हैं। फ़ास्ट ग्रुप की -ाही निशानी है ना। शरीर छूट जा-े लेकिन दिलतख्त नहीं छूट सकता। इतना पक्का है ना? तो -ो तख्त किसको मिलता है? जो पद्मापद्म भाग-ावान हैं। तो छोड़ेंगे कैसे? चैलेन्ज करते हो कि भले ट्रॉ-ाल करो। इतने अटल हो ना। बच्चों की हिम्मत को देख बाप भी बलिहार जाते हैं। दुनि-ा के आगे फ़ख़र से कहते हो कि हम परमात्म प्-ारे बन ग-े। इसी फ़ख़र में रहने वाले फ़िक्र से फ़रिग हो। फ़िक्र सब खत्म हो गई ना कि एक दो कोने में रह ग-ा? कोई जेब में छिपा हुआ तो रह नहीं ग-ा? जब बाप साथ है तो बेफ़िक्र बादशाह हो। बाप को सब फ़िक्र दे दी ना? देने में होशि-ार हो ना? कि सम्भालने में होशि-ार हो? देने में भी होशि-ार हो और लेने में भी होशि-ार हो! कभी ग़लती से कहते हो कि मेरा मन आज थोड़ा-सा उदास है, तो मेरा है क-ा? -ा तेरा हो ग-ा? -ा उस

सम-ा मेरा हो जाता है? मेरा मन नहीं लगता, मेरा मन नहीं करता--ो बोल ही व्-ार्थ बोल हैं। मेरा कहना माना मुश्किल में पड़ना। तो मन दे दि-ाा है -ाा रख दि-ाा है? -ाा कभी-कभी वापस ले लेते हो? तो ब्राह्मणों की भाषा क-ाा है? मेरा -ाा तेरा? तो क-ों सोचते हो? -ो डिक्शनरी की भाषा ही नहीं है। मेरा-मेरा कहकर मैला कर देते हैं। मन दे दि-ाा, तन दे दि-ाा, धन दे दि-ाा, ट्रस्टी हो, मेरा नहीं है। ट्रस्टी हो -ाा गृहस्थी हो? गृहस्थी माना मेरा, ट्रस्टी माना तेरा। कौन हो सभी? अपने में ट्रस्ट है? बाप तो स्व-ां ऑफर करता है मैं आपके साथ हूँ। अच्छा, विश्व कल-ाण के -ाज्ञकुण्ड भिन्न-भिन्न देशों में प्रज्जवलित कर लि-ो। बापदादा अनेक देशों में मैसेज देने वाले सेवाधारी बच्चों को देख बहुत हर्षित होते हैं कि वाह मेरे बच्चे वाह! कौन हो? वाह-वाह बच्चे। वाह-वाह हो ना। हा-ा-हा-ा करने वाले तो नहीं ना? अच्छा, बाप विश्व कल-ाणकारी है ना तो कोई भी एरि-ाा वंचित न रहे। कोने-कोने से, चाहे एक निकले, चाहे दो निकले, लेकिन निकलने ज़रूर हैं। तो वृद्धि तो होनी है। तो हिम्मत है, मदद भी है।

जहाँ बाप का हाथ है वहाँ सफ़लता है ही है। बाप की श्रीमत का हाथ अर्थात् वरदान का हाथ। कोई भी का-ार्ा करते हो तो पहले -ो स्मृति में लाओ कि श्रीमत का हाथ, वरदान का हाथ सदा हमारे ऊपर है।